अध्याय-द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय–द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका–

किसी भी क्षेत्र में अनुसंधान की प्रक्रिया में साहित्य का पुनरावलोकन महत्वपूर्ण कदम है। शोधकार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एवं प्रारंभिक एवं अनिवार्य प्रक्रिया हैं। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य है अनुसंधान की समस्या से संबंद्ध उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोशो, पत्र–पत्रिकाओं,प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों, एवं अभिलेखों आदि से हैं, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं का निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। उसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नही बढ़ाया जा सकता है। जब तक उसे ज्ञान न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है? किस विधि से कार्य किया गया है तथा इससे निष्कर्ष क्या आये? तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता हैं। **गुडवार तथा स्केटस्** कहते है– 'एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधी संबंधी आधुनिकतम् खोजों से परिचित होता रहें, उस प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करनेवाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र में संबंधित सूचनाओं से परिचित होना आवश्यक हैं।

2.2 संबंधित शोध साहित्य –

इन्दरपुर (1968),

चन्द्रपुर के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की भाषा संबंधी गलतियों का अध्ययन से संबंधित शोध कार्य किया और लिखित परीक्षण से यह पाया कि बच्चे सुनकर सही नही लिख सकते हैं।'

एच.सी.नसीम (1978),

हरियाणा राज्य में कक्षा 5 के बच्चों की जानकारी हेतु जाँच–पड़तल का अध्ययन किया।

उद्देश्य–

- दस वर्ष तक के विद्यार्थियों की समज में आनेवाले शब्दों की सूची तैयार करना।
- पाठ्यपुस्तकों के लेखको को बच्चों के स्तर उच्च निम्न को ध्यान में रखते हुए श्रेणीबद्ध पुस्तकें तैयार करने के लिए सक्षम करना।
- भाषायी ज्ञान में पिछड़ें हुए विद्यार्थियों के लिए शिक्षकों को उपचारात्मक परीक्षण तैयार करने के लिए सक्षम करना।

निष्कर्ष –

निष्कर्ष में यह पाया कि कक्षा पाँच में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों में ऐसे थे जिनका कठिनाई स्तर शून्य था। और कई ऐसे जिनका 99 प्रतिशत 120 प्रतिशत सें कम कठिनाई स्तर वाले 202 शब्द पाए गये। 298 शब्द ऐसे थे जिनका कठिनाई स्तर 70 से कम था। 20 प्रतिशत से 69 प्रतिशत तक के कठिनाई स्तर

वाले 1525 शब्द पाए गये। 1525 ऐसे शब्दों को बताया गया, जो कि 10 वर्ष तक के विद्यार्थियों को पता होने चाहिए।

अग्रवाल (1981),

अग्रवाल ने (1981) में पढ़ाने कि योग्यता के परीक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया गया। उन्होंने पढ़ने की योग्यता शाब्दिक व अशाब्दिक उपलब्धि के बीच संबधों का अध्ययन किया। इस अध्ययन में संज्ञानात्मक कारण असंज्ञानात्मक कारकों से अधिक महत्वपूर्ण हैं।

देसाई (1986),

कक्षा चार के विद्यार्थियों की भाषा योग्यता निदान एवं उपचारात्मक शिक्षा पर एक प्रोजेक्ट लिया। न्यादर्श के रूप में अहमदाबाद में दो नगर निगम की शालाओं एवं दो प्राईवेट शालाओं में पढ़ रहें थे, बच्चें को लिया। यह निष्कर्ष पाया कि पूर्व की कक्षाओं में जो विद्यार्थियों ने भाषा में सीखा उसमें अनेक दोषपूर्ण उच्चारण, गलतवाक्य, लिखना आदि थें।

वाजपेयी (1990),

माध्यमिक स्तर पर भोपाल नगर के छात्र-छात्राओं के हिन्दी उच्चारण दोष का समीक्षात्मक अध्ययन नामक विषय पर शोधकार्य किया हैं। इस अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला है कि छात्र-छात्राओं की मात्रासंबंधी त्रुटियों में सार्थक अंतर हैं।

कुमारी नन्दा बी (1992),

मद्रास क्षेत्र के केन्द्रीय विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को हिन्दी लेखन में आनेवाली त्रुटियों का निदानात्मक अध्ययन।

उद्देश्य–

- केन्द्रीय विद्यालय के कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों के लेखन में आनेवाली त्रुटियों का अध्ययन करना।
- त्रुटियों को व्याकरण की दृष्टि से विभिन्न कौशलों में विभक्त करना।
- त्रुटियों के स्त्रोंतो एवं कारणों का अध्ययन करना।
- सभी त्रुटियों को उनकी महत्ता के आधार पर विभक्त करना और उन त्रुटियों सें संबंधित अनुपात का अध्ययन करना।

निष्कर्ष–

कुल न्यादर्श से 75 प्रतिशत त्रुटियों में छः प्रकार की व्याकरणीय क्षेत्र में त्रुटियाँ की जो इस प्रकार हैं।

- पद व्याख्या – 97.05 प्रतिशत
- विराम चिह्न – 88.07 प्रतिशत
- वाक्यांश – 84.07 प्रतिशत
- एक शब्द – 81.69 प्रतिशत

विद्यार्थियों ने हिन्दी भाषा उपलब्धि, बुद्धि तथा सामाजिक–आर्थिक स्थिति के आधार पर नकारात्मक सह संबंध की प्रतिशत में त्रुटियाँ की है।

श्रीवास्तव एवं अन्य (1999),

विकास खण्ड स्त्रोंत केन्द्र तथा संकुल स्त्रोत केन्द्र को शैक्षिक पक्षों के द्वारा सुदृढीकरण नामक प्रोजेक्ट में कक्षा पाँच के 100 बच्चों पर हिन्दी भाषा उपलब्धि ज्ञान का अध्ययन किया तथा पाया कि 60 प्रतिशत बच्चों पढ़ने में, 30 प्रतिशत बच्चें बोलने में, 10 प्रतिशत बच्चे लिखने में, तथा 30 प्रतिशत बच्चें मात्राओं में त्रुटियाँ करते हैं।

मंजुलता श्रोती (2001),

सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की भाषा अधिगम संबंधी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन नामक शोधकार्य किया गया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि सामान्य जाति के विद्यार्थी अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा लेखन में अधिक त्रुटियाँ करते हैं।

2.3 एम.एड्. स्तर पर हुए शोधकार्य –

कुसूम रस्तोगी (1969),

हिन्दी की अशुद्धियों का विवेचनात्मक अध्ययन नामक विषय पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन में मध्यमवर्गीय बच्चों में भाषा लेखन, श्रवण, पठन में गलतियाँ पायी गई हैं। उपर्युक्त संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र में हुए अध्ययनों से मिलेजुले परिणाम प्राप्त हुए तथा अभी भी कई समस्याएँ व्याप्त हैं। अतः इस क्षेत्र में अध्ययन करने की आवश्यकता हैं।

आशा फडके (1988-89),

आशा फड़के ने अपने लघुशोध निबंध में 'मराठी माध्यम के कक्षा 5वीं से 7वीं तक विद्यार्थियों को मराठी विषय के अध्ययन में आनेवाली समस्या का अध्ययन किया। उन्होंने सर्वेक्षण विधि द्वारा निष्कर्ष में यह पाया कि-

- छात्रों को उच्चारण लेखन एवं बोली भाषा पर उनके वातावरण का प्रभाव होता है।
- छात्रों को उच्चारण के बारे में सही आकलन नहीं होता।
- छात्रों का पाठ्यपुस्तक में कमियाँ रहती हैं।

इस निष्कर्ष से कुछ सुझाव दिये गये हैं।

- शैक्षिक सामग्री का प्रयोग शिक्षकों ने किया तो व्याकरण विषय में होने वाली कठिनाईयाँ कम हो सकती है।
- छात्रों कक्षा पठन में ध्यान नहीं देते लेकिन कुछ उदाहरण पठन करने के लिए देने चाहिए।
- छात्रों के स्तर को देखकर ही उदाहरणों का प्रयोग अध्यापन में होना चाहिए।

अमिता सिंह (2000), एम.एड्. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,भोपाल

अमिता सिंह (2000) ने कक्षा 6 के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाईयों के उपाय नामक विषय पर अध्ययन किया। और अंत में निष्कर्ष निकाला की विद्यार्थियों को मुहावरें का वाक्य प्रयोग, शब्द से वाक्य बनाना, विश्लेषण, लिंगभेद युक्त लेखन में कठिनाई हैं। अंत में अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा शासकीय विद्यालयों में विद्यार्थी हिन्दी भाषाओं में अधिक अधिगम कठिनाई का अनुभव करते हैं।